एक दिन मैं दफ़्तर से विलंब से आया। निर्मला आँगन में चुपचाप सिर पर हाथ रखकर बैठी थी। अन्य लड़कों का पता नहीं था, केवल लड़की अपनी माँ के पास खड़ी थी। अँगीठी अभी जली नहीं थी। आँगन गंदा पड़ा था। बर्तन बिना मले हुए रखे थे। सारा घर जैसे काट रहा था।

– क्या बात है ? – मैंने पूछा।

– बहादुर भाग गया।

– भाग गया! क्यों ?

– पता नहीं ! आज तो कुछ हुआ भी नहीं था। सबेरे से ही बड़ा प्रसन्न था। बराबर माता जी-माता जी किए जा रहा था। दोपहर में खाना खाया। उसके बाद आँगन से सिल-बट्टा लेकर बरामदे में रखने जा रहा था कि सिल हाथ से छूटकर गिर गई और दो टुकड़े हो गई। शायद इसी डर से वह भाग गया कि लोग मारेंगे। पर, मैं इसके लिए उसको थोड़े कुछ कहती ? क्या बताऊँ, मेरी किस्मत में आराम ही नहीं...

– कुछ ले गया ?

– यही तो अफ़सोस है। कोई भी सामान नहीं ले गया है। उसके कपड़े, उसका बिस्तरा, उसके जूते – सभी छोड़ गया है। पता नहीं उसने हमें क्या समझा ? अगर वह कहता, तो मैं उसे रोकती थोड़े? बल्कि उसको ख़ूब अच्छी तरह पहना-ओढ़ाकर भेजती, हाथ में उसकी तनख़ाह के रुपए रख देती। दो-चार रुपए और अधिक दे देती। पर वह तो कुछ ले ही नहीं गया..

– और वे ग्यारह रुपए ?

– अरे, वह सब झूठ है। मैं तो पहले ही जानती थी कि वे लोग बच्चों को कुछ देना नहीं चाहते, इसलिए अपनी गलती और लाज छिपाने के लिए यह प्रपंच रच रहे हैं। उन लोगों को क्या मैं जानती नहीं? कभी उनके रुपए रास्ते में गुम हो जाते हैं... कभी वे गलती से घर ही पर छोड़ आते हैं। मेरे कलेजे में तो जैसे कुछ हौंड़ रहा है। किशोर को भी बड़ा अफ़सोस है। उसने सारा शहर छान मारा, पर बहादुर

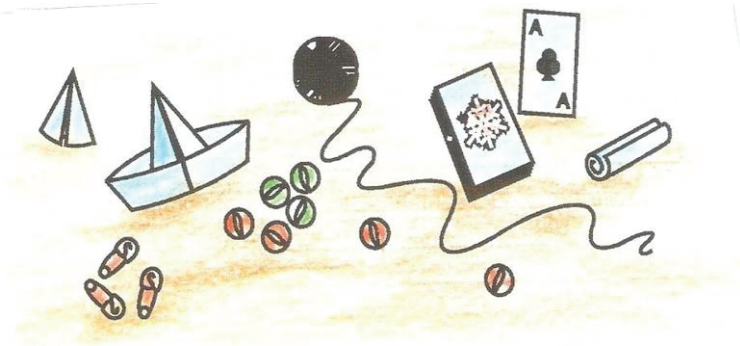

चित्र 1.7

टिप्पणी

विलंब – देर
सारा घर जैसे काट रहा था – घर में रहना बुरा लग रहा था
हौंड़ना – खलबलाना, उथल–पुथल होना
अफ़सोस – दुख
पहना-ओढ़ाकर भेजती – वस्त्र आदि बहुत सारी चीज़ें देकर भेजती।
प्रपंच – दिखावा, छल
सारा शहर छान मारा – सारे शहर में ढूँढ लिया
कलेजा बैठना – दुखी होना

टिप्पणी

लघुता – छोटापन
अलगनी – कपड़े टाँगने की रस्सी

नहीं मिला। किशोर आकर कहने लगा – अम्माँ, एक बार भी अगर बहादुर आ जाता तो मैं उसको पकड़ लेता और कभी जाने न देता। उससे माफ़ी माँग लेता और कभी नहीं मारता। सच, अब ऐसा नौकर कभी नहीं मिलेगा। कितना आराम दे गया वह। अगर वह कुछ चुराकर ले गया होता, तो संतोष हो जाता...

निर्मला आँखों पर आँचल रखकर रोने लगी। मुझे बड़ा क्रोध आया। मैं चिल्लाना चाहता था, पर भीतर ही भीतर मेरा कलेजा जैसे बैठ रहा हो। मैं वहीं चारपाई पर सिर झुका कर बैठ गया। मुझे एक अजीब-सी लघुता का अनुभव हो रहा था। यदि मैं न मारता, तो शायद वह न जाता।

मैंने आँगन में नज़र दौड़ाई। एक ओर स्टूल पर उसका बिस्तरा रखा था। अलगनी पर उसके कुछ कपड़े टँगे थे। स्टूल के नीचे वह भूरा जूता था, जो मेरे साले साहब के लड़के का था। मैं उठकर अलगनी के पास गया और उसके नेकर की जेब में हाथ डालकर उसका सामान निकालने लगा – वही गोलियाँ, पुराने ताश की गड्डी, ख़ूबसूरत पत्थर, ब्लेड, कागज़ की नावें...

– अमरकांत

बोध प्रश्न

सर्वाधिक उपयुक्त विकल्प चुनकर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए :

1. ''माँ-बाप का कर्ज़ा तो जन्म भर भरा जाता है'' – यह वाक्य किसका है?

   (क) निर्मला का ☐ (ख) वाचक का ☐

   (ग) बहादुर का ☐ (घ) किशोर का ☐

2. ''देख बे, मेरा काम सबसे पहले होना चाहिए। अगर एक काम भी छूटा, तो मारते-मारते हुलिया टाइट कर दूँगा''– यह कथन किसका है?

   (क) बहादुर का ☐ (ख) वाचक का ☐

   (ग) किशोर का ☐ (घ) रिश्तेदार का ☐

3. ''महीन खाने से नौकरों की आदत बिगड़ जाती है''–यह बात निर्मला से किसने कही?

   (क) उसके पति ने ☐ (ख) पड़ोसिन ने ☐

   (ग) उसके बेटे ने ☐ (घ) रिश्तेदार ने ☐

टिप्पणी

1.2 आइए समझें

आइए, अब हम इस कहानी को समझने की कोशिश करते हैं। कहानी में मुख्यतः पाँच तत्त्व होते हैं— कथावस्तु, पात्र, संवाद, देशकाल या वातावरण और भाषा-शैली। हम इन्हीं को ध्यान में रखते हुए इस कहानी की विवेचना करेंगे। कथावस्तु में मुख्य कथा या कहानी के विषय-क्षेत्र की बात की जाती है। समय-समय पर उपस्थित होने वाले पात्रों को समझने का काम पात्र और चरित्र-चित्रण के अंतर्गत किया जाता है। कहानी में पात्र केवल उपस्थित ही नहीं होते। वे अपना व्यक्तित्व साथ लेकर आते हैं। संवाद कहानी का मुख्य अंग होते हैं। इन्हीं से कहानी आगे बढ़ती है और पात्र का व्यक्तित्व भी प्रकट होता है। कहानी की भाषा व शैली नामक तत्त्व के अंतर्गत भाषा एवं प्रस्तुति की शैली का अध्ययन किया जाता है अर्थात् कहानी की भाषा कैसी है? शब्द-चयन कैसा है? कहानी कहने का तरीका क्या है? देशकाल या वातावरण में हम यह समझने का प्रयास करते हैं कि कहानी में किन परिस्थितियों अर्थात् किस समय और परिवेश की बात की गई है।

1.2.1 कथावस्तु

ज़रा सोचिए, लेखक ने इस कहानी का विषय जीवन के किस हिस्से से उठाया है यानी इसकी **कथावस्तु** क्या है? हम देखते हैं कि कहानी का एक पात्र यह कहानी सुना रहा है। उसे हम वाचक कहेंगे। उसी ने अपने परिवार और रिश्तेदारों के माध्यम से कम उम्र के घरेलू नौकरों के प्रति मध्यवर्ग के व्यवहार का चित्रण किया है। हमारे समाज का वह खाता-पीता हिस्सा, जो बहुत अमीर तो नहीं है, लेकिन गरीब भी नहीं है – मध्यवर्ग कहलाता है। वाचक का परिवार मध्यवर्गीय है।

हम कह सकते हैं कि वाचक और उसके परिवार द्वारा कहानी के शुरू में बहादुर को सताया नहीं जाता, बल्कि उसकी चिंता की जाती है। यह भी कहा गया है कि इस घर में नौकरों को घर के बच्चों की तरह रखा जाता है। बहादुर के आने से घर का माहौल भी उत्साहपूर्ण है। बहादुर की चिंता करने का एक और कारण है, वह है – दूसरों के सामने अपने को बढ़ा-चढ़ाकर दिखाना। इसीलिए निर्मला बहादुर के प्रति अपनी चिंता के बारे में लोगों को सुना-सुनाकर बहुत कुछ कहती है।

कहानी शुरू कैसे होती है – इस पर विचार करें, तो पाएँगे कि वाचक अचानक अपने गंभीर हो जाने की बात कहता है, बहादुर का नाम नहीं लेता, उसके लिए 'वह' का प्रयोग करता है। फिर, निर्मला की चमकती हुई दृष्टि का उल्लेख करता है। लेखक ने पूरी सूचनाएँ देने के स्थान पर केवल इस प्रकार के संकेत ही क्यों दिए? इस प्रकार की प्रस्तुति के कारण हम इस कहानी को पढ़ने के लिए प्रेरित होते हैं।

अगले दो अनुच्छेदों में हमें कुछ सूचनाएँ मिलती हैं। ये हमारी कुछ जिज्ञासाओं को शांत करती हैं। जैसे, नौकर रखने की ज़रूरत क्यों पड़ी? बहादुर कौन है? कहाँ से आया है ? क्यों आया है? उसका परिवार कैसा है? आदि। यहाँ पर एक संकेत ऐसा भी है, जिसका विकसित रूप हम कहानी में आगे देखते हैं कि बहादुर की माँ बहुत गुस्सेवाली है। वह बहादुर के काम न करने पर उसे मारती है। बहादुर की माँ भैंस के कारण बहादुर को इतना क्यों मारती है? कारण है कि बहादुर काम में सहायता तो नहीं करता, उल्टे उस भैंस को भी मारता है, जो परिवार का पालन-पोषण करने में सहायक है। बहादुर बच्चा है, इस बात को समझ नहीं पाता। उसे लगता है कि माँ को उससे ज़्यादा भैंस प्यारी है। उसे माँ का मारना बहुत बुरा लगता है और वह घर से भाग जाता है।

कहानी में ऐसी स्थिति आगे भी आती है। छोटी-छोटी गलतियों पर किशोर उसे मारता है। वाचक झूठे रिश्तेदारों के कारण बहादुर की पिटाई करता है। तीनों स्थितियों में बहादुर पिटाई होने के कारण बहुत दुखी होता है।

इस कहानी की तीन घटनाओं से आप भी बहुत दुखी हुए होंगे। इन तीनों का संबंध बहादुर के पिटने से है। कहानी में वाचक के बेटे किशोर के उल्लेख के बाद परिवर्तन तेज़ी से होने लगता है। उससे पहले सब कुछ ठीक-ठाक दिखाई देता है। वाचक के घर में बहादुर को सबसे पहले किशोर पीटता है। दूसरी घटना वह है, जब निर्मला बहादुर के लिए रोटियाँ बनाना बंद कर देती है। मोहल्ले की किसी महिला ने उसे समझा दिया है कि अच्छा खाने से नौकरों की आदत बिगड़ जाती है। यहाँ पर बहादुर द्वारा अपनी रोटियाँ स्वयं न बनाने पर वह उसे मारती भी है। यहीं हम एक और संकेत देख सकते हैं, जो बहादुर के इस कथन में निहित है– "मेरी माँ भी सारे घर की रोटियाँ बनाकर मुझसे रोटियाँ सेंकवाती थी।" इसका अर्थ हुआ कि बहादुर की माँ उसे मारती भी थी और उसके लिए रोटियाँ भी नहीं बनाती थी, इसलिए वह घर से भागा। यही स्थितियाँ वाचक के घर में भी बन रही हैं, लेकिन अभी बहादुर भागता नहीं है। वह प्रसन्न दिखने की कोशिश करता है, पर अब वह पहले वाला बहादुर नहीं रहता। उसे हर समय भय बना रहता है कि कहीं पिटाई न हो जाए। इस कारण वह अधिक गलतियाँ करने लगता है।

चित्र 1.8

आइए, अब तीसरी घटना देखते हैं, जो इस कहानी के अंत को तय कर देती है। इस घटना में ख़ुद वाचक बहादुर को पीटता है। क्यों पीटता है—यह आप पढ़ ही चुके हैं।

टिप्पणी

वाचक द्वारा पीटे जाने का बहादुर पर बहुत गहरा प्रभाव पड़ता है। उसका चेहरा भय से काला पड़ जाता है। आँखों में आँसू आ जाते हैं। बहादुर को पीटा तो किशोर और निर्मला ने भी है। पिटने पर वह पहले भी रोया है, लेकिन उसे भय पहली बार लगा है। आँखों से आँसू गिरने का वर्णन भी पहली बार है और उस पर चोरी का आरोप भी पहली बार ही लगा है। बहादुर अंदर तक दुखी भी यहीं होता है। इसके पहले उसे इस बात का संतोष था कि कम-से-कम घर का मालिक तो उसे नहीं मारता, लेकिन अब तो वह भी मारने लगा है— बिना किसी गलती के, दूसरों के कहने पर।

बहादुर के भागने के पीछे बहुत बड़ा कारण वाचक द्वारा पीटा जाना है।

कहानी के अंतिम तीन-चार अनुच्छेद बहुत ही मार्मिक हैं, जिनमें पूरे परिवार के पश्चाताप का उल्लेख है। निर्मला और किशोर को भी अपनी गलतियों का अहसास होता है, लेकिन उस अहसास में सबसे अधिक उनके भीतर का वह दुख दिखाई देता है कि बहादुर के चले जाने के बाद घर के सारे काम अब उन्हें ही करने पड़ेंगे। अगर उसके भाग जाने का दुख सचमुच किसी को है, तो वह है – वाचक। उसे लगता है कि यदि वह बहादुर को न मारता, तो बहादुर कभी न भागता। वह बहादुर के भागने पर उतना दुखी नहीं है, जितना उसके भागने के कारण से दुखी है।

बहादुर भागते-भागते भी अपने निर्दोष होने का सबूत दे जाता है। जब वह अपने घर से भागा था, तो कम-से-कम दो रुपए तो लेकर भागा था। यहाँ तो वह अपनी तनख़्वाह के पैसे और अपना सामान भी छोड़ गया।

वाचक को लगता है कि उसने बहादुर की पिटाई करके बहुत बड़ा अपराध किया है। वह अपनी ही नज़रों में ख़ुद को छोटा महसूस करता है। अंतिम अनुच्छेद में वह बहादुर के नेकर की जेब से वही सामान निकालता है, जिस सामान को देखकर बहादुर अपने परिवार, अपनी माँ, अपने गाँव, अपने देश को याद करता था। इस घटना से दो बातें स्पष्ट होती हैं। पहली तो यह कि बहादुर स्वाभिमानी है। वही बहादुर, जिस पर चोरी का आरोप लगाया गया था, घर का सामान तो क्या, अपनी वे चीज़ें भी छोड़ जाता है, जो उसे बेहद प्रिय थीं। दूसरी बात यह कि घर में काम करने वाला नौकर भी आदमी होता है, कोई वस्तु नहीं, जिसका मनमर्ज़ी इस्तेमाल करते रहो। उसके भी दिल होता है। वह भी अपने प्रति अच्छे-बुरे व्यवहार को समझता है, सोचता है, महसूस करता है। वाचक इस घटना के माध्यम से यह दिखाना चाहता है कि नौकर के प्रति बुरा व्यवहार और निर्दयता किस तरह अंततः पछतावे का कारण बनते हैं।

क्रियाकलाप-1.1

माँ द्वारा पीटे जाने पर बहादुर घर से भाग जाता है। बहादुर की जगह आप होते, तो निम्नलिखित में से कौन सा विकल्प चुनते? चुने गए विकल्प के पक्ष में अपने तर्क भी लिखिए–

(क) भागकर अपने किसी रिश्तेदार के यहाँ चले जाते।

(ख) घर की परिस्थितियाँ समझकर माँ की सहायता करते।

विकल्प :

तर्क :

1.2.2 पात्र और चरित्र-चित्रण

आइए, अब इस कहानी के प्रमुख पात्रों के कार्यों के आधार पर उनके व्यक्तित्व की विशेषताओं को समझने का प्रयास करते हैं। देखते हैं कि लेखक ने उनका चरित्र-चित्रण किस प्रकार किया है।

कहानी का मुख्य पात्र बहादुर है, इसीलिए कहानी का शीर्षक **'बहादुर'** रखा गया है। वह बारह-तेरह साल का है। छोटे कद का मोटा, गोल-मटोल है। रंग गोरा है। चेहरा चपटा है। आपने नेपाल के लोगों या पहाड़ी क्षेत्र में रहने वालों को देखा ही होगा, वैसा ही है बहादुर। उसकी आँखें छोटी-छोटी हैं, जिन्हें वह जल्दी-जल्दी झपकाता रहता है। उसने सफ़ेद नेकर, आधी बाँह की सफ़ेद कमीज़ और भूरे रंग के जूते पहन रखे हैं। गले में रूमाल बाँध रखा है। यह वर्णन शब्दों के माध्यम से एक चित्र उपस्थित करता है। बहादुर की आकृति हमारे सामने स्पष्ट हो जाती है, जैसे हम उसे देख रहे हों।

अब उन विशेषताओं को देखें, जिनके कारण बहादुर हमें अच्छा लगता है।

बहादुर बच्चा है। उसमें बचपन का भोलापन भी है और संवेदनशीलता भी। यानी, सुख और दुख का उस पर तुरंत असर होता है। उसके व्यक्तित्व की सभी विशेषताओं का आधार यही संवेदनशीलता है। वह इसीलिए अपने घर से भागता है। उसकी माँ बहुत गुस्सैल थी, उसे बहुत मारती थी— यह बहादुर को बुरा लगता था। पीटकर उससे काम नहीं करवाया जा सकता। आप देखेंगे कि वाचक के घर में भी वह काम करने में गलतियाँ तभी करता है, जब उसे पीटा जाता है। उसे न तो अपनी माँ का मारना समझ में आता है, न ही इस परिवार के लोगों का। वह चोरी के झूठे आरोप को भी सहन नहीं कर पाता। वाचक द्वारा पीटे जाने का उस पर बहुत गहरा प्रभाव पड़ता है। इसके विपरीत, जब बहादुर को थोड़ा-सा भी प्यार मिलता है, तो वह बहुत काम करता है। वह घर के लोगों का सम्मान करता है। निर्मला के स्वास्थ्य का पूरा ध्यान रखता है, उसे कोई काम नहीं करने देता। यहाँ तक कि वह निर्मला को माँ की तरह समझने लगता है।

बहादुर ईमानदार है। वाचक के यहाँ वह पूरी ईमानदारी से काम करता है। रिश्तेदार जब उस पर चोरी का आरोप लगाते हैं, तो वाचक कहता है – अरे नहीं, वह ऐसा नहीं है। जब कभी उसने दो-चार आने इधर-उधर पड़े देखे, तो उठाकर निर्मला के हाथ में दे दिए। जब वह वाचक के घर से भागता है, तो कुछ भी लेकर नहीं जाता। यहाँ तक कि अपने कपड़े, जूते, खेलने का सामान, तनख़्वाह तक छोड़ जाता है।

बहादुर मेहनती और हँसमुख लड़का है। उसके आने के बाद वाचक के घर के लोगों को बहुत आराम मिलता है। अब कोई एक तिनका तक इधर से उठाकर उधर नहीं रखता। बहादुर घर के सारे काम करता है – घर की सफ़ाई, कमरों में पोंछा, अँगीठी जलाना, चाय बनाना, कपड़े धोना, बर्तन साफ़ करना। इतना काम करने के बाद भी खाना बनाने की ज़िद करता है। बच्चा होते हुए भी रात को सबके सोने के बाद सोता है और सुबह सबसे पहले उठ जाता है; फिर भी वह हमेशा ख़ुश रहता है, हँसता रहता है। उसे छेड़-छेड़कर सब हँसते हैं, लेकिन वह किसी की बात का बुरा नहीं मानता, सबको प्रसन्न रखता है।

आपने बहुत से चुस्त और फुर्तीले बच्चों को देखा होगा। बहादुर वैसा ही है। उसके बारे में एक जगह उल्लेख किया गया है कि वह फिरकी की तरह नाचता रहता था यानी काम के लिए घर में इधर से उधर दौड़ता रहता था। वह अपने गाँव में पेड़ों पर चढ़कर चिड़ियों के घोंसलों में हाथ डालकर उनके बच्चों को पकड़ता था और फल तोड़-तोड़कर खाता था। यहाँ, वाचक के घर में, भी दातून तोड़ने के लिए तुरंत पेड़ पर चढ़ जाता है।

बहादुर स्वाभिमानी है। किशोर द्वारा पिटाई को तो वह सहन कर लेता है, लेकिन 'सूअर का बच्चा' कहने पर काम करने से मना कर देता है। कोई उसके पिता को गाली दे, यह उससे सहन नहीं होता। उसके स्वाभिमान का पता हमें तब भी लगता है, जब निर्मला केवल उसी की रोटियाँ बनाना बंद कर देती है। अपनी रोटियाँ ख़ुद न बनाने के कारण उसे निर्मला से मार भी खानी पड़ती है, लेकिन वह इस भेदभाव को सहन नहीं कर पाता और बिना भोजन किए सो जाता है।

उसके स्वाभिमान का संकेत तब भी मिलता है, जब वाचक उसे चोरी के आरोप के कारण मारता है। वाचक के अलावा सब उसे मारते हैं, पर वह घर से नहीं भागता, क्योंकि उसे विश्वास है कि वाचक उसे चाहता है। लेकिन, जब उसका यह विश्वास टूटता है, तो वह भाग जाता है।

बहादुर में परिवार के प्रति कर्तव्य-बोध भी है। घर से वह भाग आया है, लेकिन उसने घर से अपने संबंध तोड़े नहीं हैं। वह अपनी तनख़्वाह के पैसे माँ के पास भेजने के लिए कहता है। कारण पूछने पर जवाब देता है – माँ-बाप का कर्ज़ा तो जन्म भर भरा जाता है।

वाचक

कहानी में दूसरा प्रमुख पात्र वाचक है। अगर आप ध्यान से देखें, तो उसके व्यक्तित्व के दो पक्ष दिखाई देंगे। उसमें मध्यवर्गीय व्यक्ति के गुण और दोष दोनों मिलेंगे। इसलिए उसके व्यक्तित्व का कोई पक्ष तो बुरा लगता है और कोई पक्ष अच्छा। पहला पक्ष तब सामने आता है, जब वह किशोर द्वारा पीटने और भद्दी गालियाँ देने पर

टिप्पणी

बहादुर को बचाता तो है, लेकिन उसका यह भी मानना है कि नौकर तो पिटते ही रहते हैं। पिता को गाली दिए जाने पर बहादुर काम करने से मना कर देता है, तो उसे हँसी आती है। निर्मला बहादुर को पीटती है, तो वह निर्मला को नहीं समझाता, उलटे बहादुर को ही डाँटते हुए कहता है कि ज़्यादा रूठना-फूलना मुझे पसंद नहीं। रिश्तेदारों को खुश रखने के लिए यह जानते हुए भी कि बहादुर चोरी नहीं कर सकता, वह उसे पीटता है।

मध्यवर्ग की एक सीमा यह होती है कि वह कुछ कार्य दिखाने के लिए करता है। उसे लगता है कि इससे उसकी सामाजिक प्रतिष्ठा बढ़ेगी। बहादुर को घर में नौकरी पर रखना इसका प्रमाण है। इस वर्ग के बहुत से लोग दूसरों के कहे या दबाव में आ जाते हैं। निर्मला और वाचक भी ऐसे ही पात्र हैं। निर्मला पड़ोस की स्त्री के कहने पर बहादुर के लिए रोटियाँ बनाना छोड़ देती है और वाचक रिश्तेदार के कहने पर बहादुर पर चोरी का शक करता है, उसे मारता है।

वाचक के व्यक्तित्व का एक रूप और भी है। उसका पछतावा बहुत महत्त्वपूर्ण है। यह पूरी कहानी ही उसके पछतावे पर लिखी गई है।

इस कहानी में बहादुर मुख्य पात्र है, जिसके इर्द-गिर्द कहानी घूमती है। इसमें निर्मला, किशोर और निर्मला के रिश्तेदार कहानी को आगे बढ़ाने में सहायक हैं— ऐसे पात्रों को गौण पात्र कहते हैं। इन गौण पात्रों में से किशोर के विषय में आपने ज़रूर कुछ सोचा होगा। किशोर और बहादुर लगभग एक ही आयु के हैं। इस आयु-वर्ग के किशोरों में मूलतः समानता होती है लेकिन वातावरण, सामाजिक परिस्थिति, आर्थिक स्थिति, पारिवारिक स्थिति आदि के कारण व्यवहार में अंतर आ जाता है। दोनों में समानता यह है कि कोई फ़ैसला लेते समय दोनों सोचते-विचारते नहीं।

पाठगत प्रश्न-1.1

सर्वाधिक उपयुक्त विकल्प चुनकर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए :

1. बहादुर ने काम करने से मना कर दिया, क्योंकि—

   (क) उसे अपने घर की बहुत याद आने लगी। ☐

   (ख) निर्मला ने उसके लिए रोटियाँ नहीं सेंकीं। ☐

   (ग) उस पर चोरी का झूठा आरोप लगाया गया। ☐

   (घ) किशोर ने उसे गाली दी, जो उसके बाप पर पड़ती थी। ☐

2. कहानी में वाचक किस वर्ग का है?

   (क) निम्न ☐ (ख) सामंत ☐

   (ग) मध्य ☐ (घ) उच्च ☐

टिप्पणी

3. बहादुर बहुत संवेदनशील है, क्योंकि–

(क) वह सिल टूटने पर घर से भाग जाता है ☐

(ख) सभी के लिए दौड़-भाग कर काम करता है ☐

(ग) मारपीट का उस पर कोई प्रभाव नहीं होता ☐

(घ) झूठे आरोप लगने पर वह घर से भाग जाता है ☐

4. 'माँ बाप का कर्ज़ा तो जन्म भर भरा जाता है,' बहादुर के इस कथन से पता लगता है कि–

(क) उसे माँ-बाप द्वारा लिया गया कर्ज़ा चुकाना है ☐

(ख) उसे माँ-बाप के प्रति अपने कर्तव्य का बोध है ☐

(ग) उसके माँ-बाप जीवन भर कर्ज़ चुकाते रहे ☐

(घ) उसने माँ-बाप से बहुत सारा पैसा लिया है ☐

1.2.3 संवाद

पात्रों की बातचीत को संवाद कहा जाता है। संवाद कहानी के घटनाक्रम को आगे बढ़ाते हैं, चरित्रों के व्यक्तित्व की विशेषताएँ बताते हैं और कहानी में नाटकीयता का गुण उत्पन्न करते हैं।

'बहादुर' कहानी में संवाद अधिक नहीं हैं, क्योंकि वाचक पाठक से सीधे बात कर रहा है। एक के बाद एक घटनाओं की जानकारी वही देता है। उसी के कथन से पात्रों के व्यक्तित्व की विशेषताओं का पता लगता है। लेखक द्वारा संवाद तब दिए जाते हैं, जब उसे वाचक द्वारा कही गई बात का प्रमाण देना होता है। जैसे– बहादुर के व्यक्तित्व की विशेषता का पता निर्मला के इस कथन से लगता है– "सच, अब ऐसा नौकर नहीं मिलेगा। कितना आराम दे गया वह।"

एक स्थान पर बहादुर के घर में आने के बाद जो उत्साहपूर्ण वातावरण बनता है, उसका उल्लेख वाचक करता है, फिर मोहल्ले के बच्चों द्वारा बहादुर से कहे गए ऐसे वाक्य हमारे सामने रखता है – "ऐ! तुमने शेर देखा है?" ऐसे छोटे-छोटे संवाद बहादुर के प्रति बच्चों के उत्साह को तो बताते ही हैं, साथ ही इस ओर भी संकेत करते हैं कि मध्यवर्गीय परिवारों में बच्चों को शुरू से ही यह सिखा दिया जाता है कि नौकरों से किस तरह बात की जाती है।

आपने कहानी पढ़ते समय ध्यान दिया होगा कि किशोर का बहादुर के प्रति कैसा व्यवहार है। किशोर के एक संवाद से भी इसका पता चल जाता है– "अगर एक काम

टिप्पणी

भी छूटा, तो मारते-मारते हुलिया टाइट कर दूँगा। साला, कामचोर, करता क्या है तू? बैठा-बैठा खाता है।''

रिश्तेदार के अंग्रेज़ी वाक्य ''यू डू नॉट नो, दीज़ पीपुल आर एक्सपर्ट इन दिस आर्ट'' में जो दृष्टिकोण है, वह बच्चों और किशोर को वही सिखाता है, जो उनके संवाद में दिखता है।

कभी-कभी वाचक दूसरों के संवादों को अपने शब्दों में कहता है। जैसे निर्मला नौकर न रखे जाने से दुखी है। वह जो कहती है, उसे वाचक इस प्रकार व्यक्त करता है – ''उसकी तरह अभागिन और दुखिया स्त्री और भी कोई इस दुनिया में होगी? वे लोग दूसरे होते हैं, जिनके भाग्य में नौकर का सुख होता है।'' यह बात निर्मला ने कही होगी या सोची होगी, लेकिन वाचक इसे अपने शब्दों में कहकर निर्मला पर व्यंग्य करता है।

हम यह देखते हैं कि इस कहानी के अंत में संवाद अधिक हैं। यह कहानी का चरम बिंदु है, इसलिए नाटकीयता की सबसे अधिक ज़रूरत यहीं पर है। निर्मला के रिश्तेदार, उसकी पत्नी और वाचक के संवादों में यह विशेषता मिलती है।

1.2.4 देशकाल और वातावरण

इस कहानी के वातावरण अथवा सामाजिक आधार या परिस्थितियों का उल्लेख करते समय हमें दो परिवारों की स्थितियों को ध्यान में रखना चाहिए। एक है बहादुर का परिवार, दूसरा वाचक और उसके रिश्तेदार का। बहादुर के पिता की मृत्यु हो चुकी है। उसकी माँ पूरे परिवार का पालन-पोषण करती है। कहानी में जिस तरह से बहादुर के घर का वर्णन है, उससे हम अनुमान लगा सकते हैं कि वह निम्न वर्ग का है, यानी गरीब। इसलिए बहादुर की माँ को बहादुर के खेलने-कूदने पर गुस्सा आता होगा। बहादुर भागकर जिस परिवार में पहुँचता है, वह एक मध्यवर्गीय परिवार है। ऐसे वातावरण में नौकरों के प्रति आम तौर पर लोगों का व्यवहार अच्छा नहीं होता। अगर नौकर कम उम्र का है, तब तो उसे और ज़्यादा दुख सहना पड़ता है।

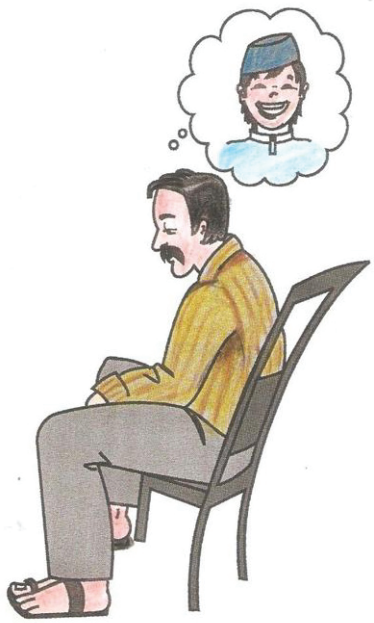

चित्र 1.9

मध्यवर्ग के लोगों में सुविधाओं को प्राप्त करने की होड़ लगी रहती है। उनके लिए नौकर टी. वी., फ़्रिज, कार आदि की तरह एक सुविधा है। ये चीज़ें घर में जब नई-नई आती हैं, तो बड़ा ख़ुशी का माहौल होता है।